एक दूसरे की गीबत न करें

मुहम्मद अज़हर मदनी

अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

क्या तुम्हें मालूम है कि गीबत (चुग़ली) क्या है? सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अपने भाई की कमियों और खामियों को उल्लेख करना जिसे वह नापसन्द करता हो। किसी ने पूछा कि अगर यह कामियाँ और खामियाँ उसके अन्दर मौजूद हों? आप सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर यह खमियां जिन को तुम बयान कर रहे हो उसके अन्दर पायी जाती हैं तो तुम ने उसकी गीबत की और यह खामियां उसके अन्दर नहीं हैं तो तुम ने उस पर बोहतान (झूठा आरोप) लगाया। (सहीह मुस्लिम)

गीबत भी आज कल के समाज का एक रोग बन गया है, गीबत बिल्कुल आम होती जा रही है, जबकि उपर्युक्त हदीस में गीबत को झूठा आरोप भी कहा गया है। देखा और सुना जाता है कि लोग छोटे छोटे मामलात में एक दूसरे की गीबत करते हैं जबकि नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम दूसरों की बुराइयों को छिपाने का भी उपदेश दिया और बुराई से रोकने के लिये एकान्त में नसीहत करने की शिक्षा दी है हर इन्सान के अन्दर कुछ न कुछ कमियाँ और कोताहियां होती हैं लेकिन गीबत करने वाला यह समझता है कि वह हर तरह की कोताही और कमियों से पवित्र है जबकि गीबत करना ही एक बहुत बड़ी कमी है। आज कल होता यह है कि जब तक एक दूसरे से बनती है तब तक एक दूसरे को अच्छा समझते हैं जैसे ही किसी मामले को लेकर मतभेद होता है, गीबत का सिलसिला शुरू हो जाता है। यह बड़े अफसोस की बात है कि आज कल लोगों के नजदीक हक का पैमाना बदल गया है जब तक किसी से फायदा पहुंचता है वह बहुत अच्छा कहलाता है और जब यह फायदा मिलना बन्द हो जाता है तो वह खराब हो जाता है। यह मानसिकता व्यक्ति समाज और संगठन में बड़े स्तर पर पायी जाती है किसी मामले को लेकर भी लोग एक दूसरे की गीबत करते है और एक दूसरे पर झूठा आरोप लगाते हैं और इसकी वजह से लड़ाई झगड़े की भी नौबत आ जाती है। इस हदीस में बोहतान का शब्द प्रयोग हुआ है, अनबन होने के बाद चुगली के साथ लोग एक दूसरे पर झूठे आरोप भी लगाने लगते हैं। हदीस में चुगली से भी मना किया गया है और बोहतान अर्थात झूठे आरोप से भी रोका गया है। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सभी लोगों को चुग्ली और झूठे आरोप से बचाए और इस हदीस के अनुसार समाज में रहने की क्षमता दे।

❑❑❑

मासिक

इसलाहे समाज

फरवरी 2025 वर्ष 36 अंक 2

शाबानुल मुअज़्ज़म 1446 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. एक दूसरे की ग़ीबत न करें 02
2. रोज़े का सन्देश मानवता के नाम 04
3. अच्छी बात और खाना खिलाने की प्रेरणा 06
4. रोज़े के महत्वपूर्ण अहकाम और मसाइल 08
5. रमज़ान के महीने के सत्कर्म का सवाब 10
6. रोज़ा और रमज़ान के महीने की फज़ीलत 13
7. ऐलाने दाख़िला 15
8. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया 16
9. इन्सान क़ुरआन की नज़र में 18
10. कौन लोग ज़कात के हक़दार हैं? 23
11. १५ वाँ आल इंडिया रेफ़्रेशर कोर्स 26
12. रमज़ानुल मुबारक के अवसर पर... 27
13. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

रोज़े का सन्देश मानवता के नाम

मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफ़ी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अल्लाह तआला ने इन्सान की ज़िन्दगी में कामयाबी के लिये जो विशेष समय दिये हैं उनमें रमज़ान का महीना भी है इस महीने का कोई विकल्प नहीं है। एक तरफ तो मुसलमान के लिये बहार का मौसम है, सृष्टि के लिये खुशखबरी है। मुसलमान इस महीने के आने से पहले इबादत की तैयारी शुरू कर देते हैं। ज़िन्दगी की आम मसरूफियात और समस्याओं में कमी करके बल्कि इसे समेट कर और रिडियूज़ करके इस मुबारक महीने की तरफ मुकम्मल तौर पर मायल हो जाते हैं और इसका चाँद देखते ही अपने रब की महानता और बड़ाई शुरू कर देते हैं क्योंकि वह चाँद व्यक्ति, समाज, देश व समुदाय और मानवता के लिये ईमान व विश्वास और हर प्रकार की अम्न व शान्ति की खुश्खबरी लेकर प्रकट होता है।

यह पवित्र कुरआन का महीना है इसमें इन्सानियत के लिये सबसे बड़ा तोहफ़ा और सबसे बड़ी और आख़िरी किताब नाज़िल हुई थी। मुसलमान रोज़े का महीना आते ही इस हिदायत देने वाली किताब की तिलावत और इसमें गौर व फ़िक्र शुरू कर देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

“रमज़ान वह महीना है जिस में कुरआन उतारा गया जो लोगों को हिदायत करने वाला है और जिस में मार्गदर्शन और सत्य व असत्य में अन्तर की निशानियाँ हैं।” (सूरे बक़रा १८५)

मोमिन अपनी ज़िन्दगी के हर चरण में इस किताब से कदम कदम पर मार्गदर्शन प्राप्त करता है, इसकी स्पष्ट शिक्षाओं और निर्देशों से लाभान्वित होने की ठान लेता है और सत्य व असत्य में अन्तर करने लगता है। यूं तो मुसलमान हर हाल में अपने अंग और दिल व दिमाग को नियंत्रण में रखता और उसके अन्दर मन पर कन्ट्रोल करने की क्षमता होती है लेकिन रमज़ान के महीने में और ज़्यादा उसको मोहतात और अपने ऊपर काबू पाने वाला बना लेता है और वह बुराइयों से दूर रहने के लिये जतन करता है चूंकि रोज़े का मतलब ही यही है कि इन्सान चाहे मर्द हो या औरत सभी बुराइयों से मुकम्मल तौर पर अपने आप को रोक लें, इसलिये वह खालिस अल्लाह तआला के लिये दिन में रोज़ा रख कर असंख्य सवाब का मालिक और हक़दार बन जाता है और रमज़ान की रातों में उठ कर कुरआन की तिलावत और रात की इबादत करके अपने पिछले

छोटे पापों की मग़्फिरत का पात्र क़रार पाता है। रोज़ा मन की पवित्रता का माध्यम है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना फर्ज़ किया गया जिस तरह तुम से पहले लोगों पर रोज़ा फर्ज़ किया गया था ताकि तुम परहेज़गारी अपनाओ'' (सूरे बक़रा-१८३)

रमज़ान के महीने और रोज़े का मक़सद व दर्शन मानवतावाद की भावना को विकसित करना भी है। रोज़ा इन्सान के अन्दर सामूहिक रूप से एक दूसरे की मदद की जोत जगाता है भूखे प्यासे लोगों की तकलीफों और कठिनाइयों का एहसास दिलाता, लालच से बचाता और गरीबों के दुख दूर करने और लोगों को अम्न व शान्ति का आदी बनाता है। समाज से बुराई और फसाद को मिटाता और उसको पवित्र दिल व पाकबाज़ बनाता है।

रमजान जैसे बरकत और कामयाबी वाले महीने की ज़रूरत और विशेष सन्देश की आवश्यकता इन्सान के सिवा अल्लाह की किसी सृष्टि को नहीं है क्योंकि वह हर वक़्त अल्लाह की इबादत में व्यस्त रहते हैं। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

सातों आस्मान और ज़मीन और जो भी इन में है उसी की तस्बीह कर रहे हैं ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसे पाकीज़गी और तारीफ के साथ याद न करती हो। हां यह सहीह है कि तुम उसकी तस्बीह समझ नहीं सकते। (सूरे इसरा-४४)

और वह अल्लाह तआला के किसी भी आदेश की अवज्ञा नहीं करते। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''निस्सन्देह आस्मान व ज़मीन के कुल जानदार और तमाम फरिश्ते अल्लाह तआला के सामने सजदा करते हैं और ज़रा भी घमण्ड नहीं करते।'' (सूरे नह्लः४६)

रमज़ान का महीना बार-बार इस लिये आता है कि इन्सान का रिश्ता उसके पालनहार से जोड़ा जाये, अल्लाह के बन्दों को उसका भूला हुआ मानवता का पाठ फिर से पढ़ाया जाये, गरीबों, ज़रूरतमन्दों, सेवकों और भूखे प्यासे लोगों की परेशानियों कठिनाइयों और भूख व प्यास की शिददत का एहसास दिलाया जाये, समाज को पाकबाज़ बनाया जाये, नियत की दुरूस्तगी, नेक कर्म, कुरआन की तिलावत, तरावीह, तहज्जुद, सदक़ा व ख़ैरात और आख़िरत की फिक्र के ज़रिये अपने मन को पवित्र करने और अल्लाह से डरने का आदी बनाया जाये, अम्न व शान्ति, सब्र व संयम, हक और सब्र की वसिय्यत, दीन पर स्थिरता, उदाराता, समानता, भाईचारा के जजबे को विकसित किया जाये, रोज़े और रोजे के महीने का यही सन्देश है। रमज़ान का महीना सबको मुबारक हो।

❑❑❑

अच्छी बात और खाना खिलाने की प्रेरणा

नौशाद अहमद

अम्र बिन आस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम के पास आया मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से पूछा ऐ अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) शुरू में इस्लाम लाने वाले कौन थे। आप सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक आज़ाद और एक गुलाम मैंने पूछा इस्लाम क्या है? आप सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अच्छी बात कहना और खाना खिलाना।

कुछ बातें सुनने और देखने में मामूली समझी जाती हैं लेकिन नेक और अच्छा काम देखने और सुनने में अगर्चे मालूमी ही क्यों न हों, अल्लाह के नज़दीक उसकी बड़ी अहमियत है और स्वयं नेक काम करने वाले इन्सान के लिये भी दुनिया व आखिरत में इस नेक काम का फल मिलेगा।

इस हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने प्रश्न कर्ता का लिहाज़ करते हुये दो बातें बताई हैं। पहला है अच्छी बात करना। अगर गौर किया जाये तो आज समाज में होने वाले झगड़े कल्ले सख्त बोलने और गलत तरीके से बोलने की वजह से होते हैं, मामूली बात पर अकड़ कर बोलना, गलत तरीके से सम्बोधित करना एक साधारण सी बात बन गई है, सूझ बूझ न होने की वजह से लोग एक दूसरे को इस तरह बोल जाते हैं जो आपसी दूरी और समाज में बहुत बड़े झगड़े और फसाद की जड़ बन जाता है जबकि एक दूसरे से नर्मी से बात करना, सभ्य तरीके से पेश आना, एक दूसरे के स्थान का ख्याल रखते हुए बोलने और बर्ताव करने से समाज में अम्न व शान्ति बनी रहती है, लोग हंसी खुशी रहते हैं। इस हदीस में नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने अच्छी और मीठी बात बोलने का उपदेश देकर हमें यह सन्देश दिया है कि मुसलमान उसी वक़्त अच्छा समझा और माना जायेगा जब वह लोगों के साथ बात चीत में नर्मी का बर्ताव करेगा, सुखी और खुश रहने का इससे बेहतर तरीक़ा क्या हो सकता है। कुरआन में भी अल्लाह तआला ने फरमाया है कि जब तुम बात चीत करे तो सीधी सच्ची बात करो। और पवित्र कुरआन में अल्लाह ने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की खूबी बयान करते हुए कहाः ऐ पैगम्बर अल्लाह की यह बड़ी रहमत है कि तुम उन लोगों के लिये नर्म स्वभाव के हो, अगर सख्त दिल और कुचरित्र होते तो यह लोग तुम्हारे पास से हट जाते (अर्थात उनके दिल तुम्हारी तरफ इस तरह न खिंचते जिस तरह अब बेतहाशा खिंच रहे हैं (आले इमरान १५९)

समाज में गरीब और अमीर दोनों तरह के इन्सान बसते हैं, किसी को अल्लाह ने ज़्यादा दौलत

दी है तो किसी को कम और किसी को मोहताज बनाया है। लेकिन किसी भी समाज की तरक्की का पैमाना यह है कि अमीर गरीब का ख्याल रखे, समाज में कोई मुहताज है तो अमीर लोगों की जिम्मेदारी है कि वह गरीबों जरूरत मन्दों और भूखों को खाना खिलायें इससे समाज में एकता त्याग और हमदर्दी की भावना पैदा होगी, गरीब को स्वंय गरीबी का एहसास नहीं होगा, और इस से अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल होगी, इस्लाम ने खाना खिलाने का उपदेश देकर हमें इस बात के लिये प्रेरित किया है कि समाज में कोई गरीब भूखा न रहने पाये। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों की बड़ी प्रशंसा की है जो ज़रूरतमन्दों और भूकों को खाना खिलाते हैं। अगर इस्लाम और पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई इन बातों पर अमल किया जाये तो समाज के छोटे मोटे झगड़ों का ख़ात्मा हो जाये पहले छोटे मोटे झगड़ों से ही बड़े बड़े झगड़े होते हैं, इस लिये छोटे झगड़ों को मामूली नहीं समझना चाहिए, हम सभी के लिये ज़रूरी है कि बात चीत में नर्मी को अपनायें और बिना वजह सख्ती का प्रदर्शन न करें। आज समाज के भूकों और गरीबों की ज़रूरत पूरी करके भी समाज की बहुत सी बुराइयों को दूर किया जा सकता है, कुछ असुगम घटनाएं भूख और गरीबी से भी घटित होती हैं इसलिये मालदारों का यह दायित्व बनता है कि वह अपनी दौलत का हिस्सा गरीबों, ज़रूरतमन्दों और भूखों पर खर्च करें, ताकि लोगों के अन्दर से गरीबी का एहसास खतम हो और इनके अन्दर अपनाइयत की भावना पैदा हो। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह मालदार लोगों को गरीबों का ख्याल रखने की अधिकृत क्षमता दे।

रमज़ान का महीना हम सभी को भूख और प्यास का एहसास दिलाता है। और यह सन्देश देता है कि गरीब लोग संसाधन न होने की वजह से अपने जीवन कैसे गुज़ारते होंगे। इसलिये रोज़े के महीने में ग़रीबों का खास ख्याल रखें, ज़कात देते वक़्त समाज के ऐसे लोगों के हर्गिज न भूलें।

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम........................
पिता का नाम...............
स्थान........................
पोस्ट आफिस...............
वाया........................
तहसील......................
जिला........................
पिन कोड..................
राज्य का नाम..............
मोबाइन नम्बर..............

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः
Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6
RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

रोज़े के महत्वपूर्ण अहकाम और मसाइल

शैखुल हदीस मौलाना उबैदुल्लाह रहमानी रह०

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इन्सान जो भी कर्म करता है उस कर्म का बदला उसे दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक मिलता है लेकिन रोज़ा के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि रोजा खालिस मेरे लिये होता है इसलिये मैं ही इस का बदला दूंगा रोज़ा रखने वाला केवल मेरे लिये अपनी जिन्सी खुवाहिशात और मेरे लिये खाने पीने को छोड़ता है। रोज़ा रखने वाले के लिये खुशी के दो अवसर हैं एक खुशी उसे इफतार के वक्त हासिल होती है और दूसरी खुशी उसे उस वक्त प्राप्त होगी जब वह अपने पालनहार से मुलाकात करेगा और रोज़ा रखने वाले के मुंह की बू अल्लाह के यहां कस्तूरी खुश्बू से ज्यादा पाकीजा है। (बुखारी १८४४ मुस्लिम १६४)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस शख्स ने रमज़ान के महीने का रोज़ा ईमान के साथ और सवाब की नियत से रखा तो उसके पिछले पाप मआफ कर दिये जाते हैं (बुखारी १६०१)

हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब रमज़ान का आखिरी दस दिन (अशरा) शुरू होता था तो आपसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात के अधिकांश भाग को जाग कर गुज़ारते। अपने परिवार वालों को भी जगाते और इबादत में ज्यादा से मेहनत करते। (मुस्लिम ११७४)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रमज़ान के महीने में उमरा करना हज करने के बराबर है। (सहीह बुखारी, १७८२, मुस्लिम १२५६)

इसी प्रकार रमज़ान के महीने में सदका खैरात करने का सवाब ज्यादा मिलता है।

अहकाम व मसाइल

सेहरी खाना सुन्नत हैः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह और उसके फरिश्ते सेहरी खाने वालों पर सलात रहमत और दुआ-ए-मगफिरत भेजते हैं (मुसनद अहमद)

सेहरी देर से खाना सुन्नत है। एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फज्र की नमाज़ और सेहरी खाने में इतना गेप रखते थे कि जिस में आदमी पचास आयत पढ़ सके (बुखारी)

फज्र तुलूअ होते ही खाने पीने से रूक जाये और दिल में नियत कर ले जुबान से अदा करने की ज़रूरत नहीं है बल्कि यह बिदअत अर्थात दीन में नई बात है।

सूरज डूबने का यकीन होते ही इफतार में जल्दी करना मुस्तहब है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया लोग उस वक्त तक खैर पर रहेंगे जब तक इफतार में जल्दी करेंगे। (बुखारी, मुस्लिम)

कुरआन की तिलावत, जिक्र नमाज़ और सदकात ज्यादा से ज्यादा किया जाये। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया रमजान के महीने में जिक्रे इलाही करने वाले की मगफिरत कर दी जाती है। एक

रिवायत में है कि तीन लोगों अर्थात रोजेदार, इन्साफ करने वाले और मजलूम की दुआ रदद नहीं की जाती। (इब्ने खुजैमा, इब्ने हिब्बान)

रोज़े की हालत में क्या करना जायज़ है और क्या करने से रोज़ा नहीं टूटता

"१. गीली या सूखी मिस्वाक दिन के किसी भी हिस्से में करना

२. सुर्मा लगाना और आंख में दवा डालना

३. सर या बदन में तेल मलना

४. खुश्बू लगाना

५. सर पर भीगा कपड़ा रखना

७. इंजेक्शन लगवाना जो कुव्वत और खाने का काम न दे।

८. जरूरत पड़ने पर खाने का नमक चेक करके तुरन्त थूक देना या कुल्ली करना

९. सुबहे सादिक के बाद नहाना

१०. मर्द का बीवी को चुंबन लेना व लिपटना, शर्त है कि मर्द अपने को कन्ट्रोल में रख सकता हो और संभोग का डर न हो।

११. रात में एहतलाम हो जाना

१२. औरत को देख कर इन्जाल अर्थात वीर्य का बाहर आ जाना।

१३. खुद से उलटी हो जाना चाहे थोड़ा हो या ज्यादा

१४. नाक में पानी डालना बगैर मुबालगा

१६. नाक के रेंठ का अन्दर ही अन्दर हलक के रास्ते अन्दर चले जाना

१७. कुल्ली करना शर्त यह है कि मुबालगा न करे।

१८. कुल्ली करने के बाद मुंह में पानी की तरी का थूक के साथ अन्दर चले जाना।

१९. मक्खी का हलक में चले जाना।

२०. इस्तिन्शाक-नाक में (पानी चढ़ाना बिना मुबालगा) की सूरत में बगैर इरादा पानी का नाक से हलक के अन्दर उतर जाना।

२१. मुंह में जमा थूक पी जाना मगर ऐसा न करना बेहतर है।

२२. मसूढ़े के खून का थूक के साथ अन्दर चला जाना।

२३. कुल्ली करते वक्त बिना इरादा पानी का हलक़ में उतर जाना।

२४. शर्मगाह में पिचकारी के ज़रिये दवा वगैरह दाखिल करना

२५. औरत से चुंबन व लिपटने की सूरत में इन्जाल हो जाना

२६. भूल कर खा पी लेना।

२७. गर्द गुबार धुवां या आटा उड़ कर हलक में चले जाना। २८. मोछों में तेल लगाना

२९. कान में तेल या पानी डालना और सलाई डालना

३०. दांत में अटके हुये गोश्त या खाने का टुकड़ा जो महसूस न हो और विखर कर हलक के अन्दर चला जाये।

जिन चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है। १. जान बूझ कर खाना पीना थोड़ा हो या ज्यादा २. जान बूझकर संभोग करना ३. जान बूझकर उलटी करना थोड़ी हो या ज्यादा

४. हुक्का, बीड़ी सिग्रेट पीना,

५. पान खाना

७. खाना पीना या संभोग करना रात समझ कर या यह ख्याल करके कि सूरज डूब गया है जबकि सुबह हो चुकी थी या सूरज डूबा नहीं था।

८. मुंह के अलावा किसी जख्म के रास्ते से नलकी के माध्यम से खाना या दवा अन्दर पहुंचाना इन सब हालतों में टूटे हुये रोज़ों को पूरा करना जरूरी है और जान बूझ कर बीवी से संभोग कर लेने पर कज़ा के साथ कफ्फारा देना भी ज़रूरी है।

❑❑❑

रमज़ान के महीने के सत्कर्म का सवाब

डा० अमानुल्लाह

रमज़ान का महीना भलाई और बरकत के एतबार से तमाम महीनों में श्रेष्ठतम महीना है इस मुबारक महीने में हमें ज़्यादा से ज़्यादा सत्कर्मों से अपनी झोली भर लेनी चाहिये।

इस लेख में उन आमाल का वर्णन किया जा रहा है जिन्हें रमज़ान के महीने में पाबन्दी के साथ करना चाहिये।

१. रमज़ान का रोज़ा हर अकलमन्द बालिग मर्द और औरत पर फर्ज है रोज़े की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है रोज़े का बदला अल्लाह स्वयं देगा। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया हदीस का अर्थ है कि चूंकि रोजेदार केवल अल्लाह के लिये खाना पीना छोड़ना है इसलिये अल्लाह तआला उसे बिना किसी वास्ते के स्वयं रोज़े का बदला देगा। (बुखारी ७४६२)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया जो शख्स ईमान और सवाब की नियत से रोज़ा रखे गा अल्लाह उसके तमाम गुनाहों को मआफ कर देगा। (सहीह बुखारी-३८)

२. क्यामुल्लैल (तरावीह) का एहतमाम करनाः क्यामुल्लैल अल्लाह के यहां बहुत ही प्रिय इबादत है पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० क्यामुल्लैल का काफी एहतमाम करते थे। रसूलुल्लाह स०अ०व० के ज्यादा देर तक खड़े रहने की वजह से आपके पैर में सूजन आ जाती थी।

रमज़ान के महीने में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ अदा करने से ज़्यादा पुण्य मिलता है बल्कि प्रतिष्ठित ओलमा तरावही की नमाज़ को जमाअत के साथ अदा करने को ही श्रेष्ठ करार देते हैं लेकिन अकेले अदा करने में कोई हर्ज नहीं है।

३. सदका खैरात करनाः सदका खैरात करना एक श्रेष्ठ इबादत है इसका बड़ा सवाब और अत्यधिक लाभ है लेकिन रमज़ान के महीने में सदका खैरात ज्यादा से ज्यादा करना चाहिये। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० भलाई के मामले में काफी दानवीर थे जब कि रमज़ान के महीने में तेज तुन्द हवाओं की तरह अल्लाह के रास्ते में दान व खैरात करते थे (सहीह मुस्लिम २३०८)

४. कुरआन की तिलावत करनाः इस्लाम ने कुरआन की तिलावत पर काफी जोर दिया है।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० रमज़ान के महीने में कुरआन की तिलावत का काफी एहतमाम करते थे। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आप स०अ०व० को हर रमज़ान में पूरा कुरआन पढ़ाया करते थे और उस रमज़ान में जिस रमज़ान के बाद आप पर कोई रमज़ान नहीं आया जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आप को दोबार कुरआन पढ़ाया। सहीह बुखारी की हदीस न० ३२२० से मालूम होता है कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह को रमज़ान के महीने में कुरआन पढ़ाया करते थे। कुरआन करीम की तिलावत की फ़ज़ीलत

बयान करते हुये रसूलुल्लाह स०अ०व० बयान करते हैं कि जो कुरआन के एक अक्षर की तिलावत करेगा उसे दस नेकी मिलेगी (सुनन तिर्मिज़ी २९१०), अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सही करार दिया है।

कुरआन की तिलावत के दौरान चन्द अहम बातों का ख्याल रखना चाहिये। कुरआन की ज्यादा से ज्यादा तिलावत करना, कुरआन की तिलावत के दौरान रोना, कुरआन को समझना, कुरआन पर अमल करना, कुरआन करीम के अनुसार अपना अकीदा बनाना।

५. एतकाफ करनाः ऐतकाफ का उल्लेख कुरआन और हदीस में मौजूद है। हज़रत मुहम्मद स०अ०व० हर रमज़ान में दस दिनों का एतकाफ करते थे और जिस साल आप का निधन हुआ आपने बीस दिनों का एतकाफ किया। (सहीह बुखारी २०४४)

रसूलुल्लाह स०अ०व० रमज़ान के आखिरी दस दिनों में पाबन्दी के साथ एतकाफ करते थे अतः रमज़ान के अंतिम दस दिन के एतकाफ की पाबन्दी करनी चाहिये एतकाफ मस्जिद में करनी चाहिये। मस्जिद के अलावा जगह में एतकाफ का सुबूत नहीं मिलता। एतकाफ किसी भी मस्जिद में कर सकते हैं। एतकाफ के लिये जामा मस्जिद की शर्त लगाना सहीह नहीं है लेकिन सबसे बेहतर एतकाफ मस्जिद हराम, मस्जिद नबवी और मस्जिदे अकसा है फिर जामा मस्जिदों में, फिर किसी भी मस्जिद में। इस मामले में मर्द और औरत सब बराबर हैं क्योंकि अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के ज़माने और आप के बाद भी औरतें मस्जिद ही में एतकाफ करती थीं।

एतकाफ़ के लिये मस्जिद के किसी हिस्से को लाज़िम पकड़ना ज़रूरी नहीं है बल्कि पूरी मस्जिद में एतकाफ के दौरान कहीं भी आ जा सकते हैं। मस्जिद के अन्दर आयोजित होने वाले तमाम दीनी प्रोग्राम में शिर्कत की जा सकती है। एतकाफ के दर्मियान ज़रूरत की वजह से एतकाफ तोड़ा जा सकता है और इसका कोई कफ्फारा (प्रायश्चित) नहीं है। ईद का चांद निकलते ही एतकाफ से निकल सकते हैं।

६. लैलतुल क़द्र की तलाश रमज़ान का आख़िरी दस दिन अत्यंत खैर व बर्कत वाला है इसी आखिरी दस दिनों में एक रात है जिसे लैलतुल कद्र कहते हैं जो मुबारक रात है और हज़ार महीनों से बेहतर है। इन दस दिनों की रातों में जिक्र व अज़कार, तसबीह तहलील और तिलावत का ज्यादा से ज्यादा एहतमाम करना चाहिये। रसूलुल्लाह इन में खुद रात को जागते और अपने परिवार वालों को भी जगाते। (सहीह बुखारी २०२४)

लैलतुल क़द्र की तलाश की फ़ज़ीलत बयान करते हुये हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमाया जो शख्स लैलतुल कद्र का क्याम करेगा उसके पिछले तमाम गुनाह मआफ कर दिये जाते हैं। (सहीह बुखारी १९०१)

शबे कद्र को पाने या उसका सवाब हासिल करने के लिये अच्छा यह है कि रमज़ान महीने की आख़िरी रोज़ों की तमाम रातों का क्याम किया जाये खास तौर से ताक रातें (२१,२३,२५,२७,२९) को इबादत में गुज़ारी जायें।

७. रमज़ान के महीने में उमरा करने का सवाब हज करने के बरबार

है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स० ने एक अंसारी औरत से फरमायाः रमजान में उमरा कर लेना क्योंकि रमज़ान में उमरा अदा करने का सवाब हज के बराबर है।

८. दुआ और जिक्र व अज़कार पाबन्दी से करना चाहिये क्योंकि यह कर्म अल्लाह को बहुत ज़्यादा पसन्द हैं क्योंकि जिक्र व अज़कार तसबीह तहलील और दुआओं के जरिये हम जहन्नम से बच सकते हैं और जन्नत के हकदार बन सकते हैं। अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने फ़रमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिसने रमज़ान का महीना पा लेने के बाद भी अपना क्षमादान नहीं करवा पाया। (सुनन तिर्मिज़ी ३५४५)

९. तौबा और माफी तलब करनाः तौबा और इस्तेगफार से अल्लाह तआला तमाम गुनाहों को मआफ़ करते हुये गुनाहों को नेकियों में बदल देता है।

अल्लाह तआला हम तमाम लोगों को हमेशा सत्कर्म करने की क्षमता दे खास तौर से रमज़ान के महीने में ज्यादा से ज्यादा नेक काम करने की क्षमता दे।

❑❑❑

(शेष पृष्ठ १६ का)

साबित बिन जह्हाक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः मोमिन पर लानत करना उसके कत्ल के समान है। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू ज़र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः छोटी सी भलाई को हक़ीर (मामूली) न समझो और अगर अपने भाई से मिलो तो उससे हंसते हुये मिलो। (मुस्लिम)अबू कतादा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े। (बुखारी, मुस्लिम)

अबू मूसा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अपने रब को याद करता है और जो नहीं याद करता है उनकी मिसाल जिन्दे और मुर्दे की तरह है। (बुख़ारी) इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो नेअमतों के बारे में अधिकतर लोग धोके में रहते हैं तनदुरूस्ती और खाली वक्त (बुखारी)

उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में सब से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और उसको सिखाये। (बुखारी, मुस्लिम)

उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अच्छी तरह वजू किया तो उसके शरीर से गलतियां निकल जाती हैं यहां तक कि उसके नाखुन से भी निकल जाती हैं। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला तुम में से किसी ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसे वुजू की ज़रूरत हो यहां तक कि वह वुजू कर ले। (बुखारी,६९५४, मुस्लिम २२५) अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः माल व इज्ज़त मालदारी नहीं है असल माल दारी नफ्स की मालदारी है। (बुखारी ६४४६ मुस्लिम १०५१)

रोज़ा और रमज़ान के महीने की फज़ीलत

सुबह फज्र शुरू होने से पहले शाम को सूरज डूबने तक खाना पीना छोड़ दिया जाये और मर्द औरत का मिलाप न हो, इसका नाम रोज़ा है। इसके अलावा किसी की गीबत चुगली, गाली, झूठी गवाही देना झूठ बोलना किसी पर बुरी नज़र डालना आदि इन बुरी हरकतों से भी रोज़ा में परहेज करना बहुत ही ज़रूरी होता है।

यूं तो हर महीना की १३वीं १४वीं और १५वीं तारीखों में और जिलहिज्जा महीने के पहले अश्रे में और शाबान के महीने में और अगर मुहर्रम की १०वीं तारीख में और सोमवार के दिन और शव्वाल में ईदुल फित्र के बाद छः रोज़े रखना, यह सब रोज़े सुन्नत हैं और उनके रखने का बड़ा सवाब है।

मगर रमज़ान का पूरा रोज़ा रखना हर मुसलमान मर्द और औरत के लिये ज़रूरी है। हां मरीज़ों, मुसाफिरों हामिला (गर्भवती) औरतों और दूध पिलाने वाली औरतों के लिये इस महीने में रोज़ा छोड़ने की इजाज़त है। मुसाफिर लोग अपने वतन में पहुंच कर अपने छूटे हुये रोज़े रखें।

बीमार लोग स्वस्थ हो जाने पर रोज़ों को बाद में कज़ा (पूरा) करें गर्भवती (हमल) वाली औरत या दूध ा पिलाने वाली हर दिन के रोज़ा के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाये या अगर बाद में पूरा (कज़ा) की सूरत हो जाये तो रोज़ा ही रख ले। हाइज़ा औरत भी हैज की हालत में रोज़ा न रखे बाद में कज़ा पूरा करे। ऐसे बूढ़े मर्द और औरत के लिये जो उम्र की आखिरी हद को पहुंच कर सख्त कमज़ोर हो चुके हो और रोज़ा की बिल्कुल ताकत न हो उनके लिये भी रोज़ा मआफ है मगर फिदया (बदले) में एक मिसकीन को खाना खिलाना जरूरी है। जब रमज़ान का चांद निकलता है तो शैतान कैद कर दिये जाते हैं और जन्नत के सब दरवाज़े खोल दिये जाते हैं इस महीने में नफिल नमाज़ का सवाब फर्ज़ के बराबर मिलता है और फर्ज़ नमाज़ों का दर्जा इतना बढ़ जाता है कि एक फर्ज़ का सवाब सत्तर फर्ज के बराबर मिलता है। इस महीने में हर नेकी के लिये यही आदेश है इस बुनियाद पर ज़कात का सवाब भी इस महीने में सत्तर गुना ज्यादा होगा।

इस महीने में हमारे प्यारे सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स० अल्लाह की विशेष तौर पर उपासना करते थे इस महीने में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरआन मजीद का दौर करते थे इस महीने में जो शख्स अपने सेवक और नोकर के साथ आसानी करेगा अल्लाह तआला उसके गुनाहों को मआफ कर देगा और जहन्नम की आग से उसे आज़ाद कर देगा।

सबसे बड़ा अभागा

(बदकिस्मत) शख्स वह है जो अल्लाह को इस रमजान के महीने में खुश न कर सके और नेकियां न कमा सके। इस महीने में जो शख्स अल्लाह की खुशी के लिये रोज़े रखेगा तो अल्लाह के यहां इस का असंख्य सवाब है जिसको लिखने की शक्ति फरिश्तों को भी नहीं है।

एक हदीस में है कि जन्नत में आठ दरवाज़े हैं उनमें एक दरवाज़े का नाम रैयान है जिस में केवल रोज़ेदार ही प्रवेश करेंगे। रोज़ादार के लिये खुशी के दो वक़्त हैं पहला इफतार का है और दूसरा दिन वह होगा जब अपने रब से मुलाकात करेगा।

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि सन्देष्टा मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः रोज़ा और कुरआन दोनों बन्दों की सिफारिश करेंगे रोज़ा कहेगा कि ऐ मेरे रब मैंने इसको दिन में खाने और पीने से रोक दिया था आज बन्दे के बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले। कुरआन कहेगा कि मैंने इसको रात में सोने से रोक दिया था और यह रात भर मेरी तिलावत करता था इसलिये इसके बारे में मेरी सिफारिश को कुबूल कर ले। हदीस में आता है कि रोज़ा और कुरआन की सिफारिश अल्लाह के यहां मान ली जायेगी। **(संकलित)**

❑❑❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

एलाने दाख़िला

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन 9 अप्रैल से 13 अप्रैल 2025 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें।

आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 5 अप्रैल 2025 है।

नोटः- हर क्षात्र को वज़ीफे के तौर पर हर महीने 3000/- दिया जायेगा। अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर दिल्ली-110025
फोन 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

अबू हुरैरा रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भला बताओ अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल बाक़ी रहेगा? लोगों ने कहाः उसके शरीर पर थोड़ी सी भी मैल बाकी नहीं रहे गी। यही मिसाल पांचों नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इन नमाज़ों के बदले गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५२८, मुस्लिम ६६७, शब्द मुस्लिम के हैं)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो कलिमे जुबान पर हलके हैं, तराजू में वज़नी हैं, रहमान के नज़दीक प्रिय हैं। सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार (पात्र) कौन है? आप ने फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारे बाप। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो जनाज़े में हाज़िर हुआ और नमाज़ पढ़ी तो उसके लिये एक क़ीरात है, और जो जनाज़े में दफन किये जाने तक हाज़िर रहा उसके लिये दो क़ीरात है। आपसे पूछा गया कि यह दो क़ीरात क्या हैं? आपने फरमाया दो बड़े पहाड़ी के समान। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी खाने पर कभी ऐब नहीं लगाया अगर खाना चाहते तो खा लेते और अगर पसन्द नहीं करते तो नहीं खाते थे। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नबी से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक सब्र पहले दुख के वक्त है। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने

फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आये गा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि वह अपने माल और आल औलाद से काट दिया गया। (बुखारी-मुस्लिम)

सालिम अपने बाप रज़ियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद केवल दो चीज़ों में है एक आदमी वह है जिसको अल्लाह ने कुरआन दिया तो वह उसकी रात और दिन में तिलावत करता है और एक आदमी वह है जिस को अल्लाह ने माल दिया तो वह उस माल को रात और दिन में खर्च करता है। (बुखारी, मुस्लिम)

जाबिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बायें से न खाओ क्योंकि बायें से शैतान खाता है। (मुस्लिम)

जाबिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाया होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से मुलाकात करे गा और उसने उसके साथ किसी को साझीदार बनाया होगा तो जहन्नम में दाखिल होगा। (मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वाले को दिया जायेगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जिस ने रात में सूरे बक़रा की आखिरी दो आयतें पढ़ीं यह उसके लिये काफी हो जायें गी। (बुखारी)

(शेष पृष्ठ १२ पर)

इन्सान कुरआन की नज़र में

प्रो० डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी

कुरआन वह अन्तिम ईश ग्रंथ है जिसमें इनसान अथवा मनुष्य की रचना का बड़े ही स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। वेदों, बाइबल तथा दूसरे ग्रंथों में इस विषय पर कोई विशेष जानकारी नहीं मिली।

निस्संदेह अल्लाह के यहां ईसा का उदाहरण आदम का सा है, जिसे उसने मिटटी से बनाया। फिर उसे कहाः हो जा तो वह हो गया (सूरा-३, आले इमरान आयत-५६)

२. जिस अल्लाह ने जो चीज़ बनाई खूब ही बनाई और मनुष्य की रचना का आरम्भ गारे से किया। (सूर-३२, अस सजदा-७)

३. हमने उन इनसानों को लेसदार गारे से पैदा किया। (सूरा-३७, अस साफ्फात, आयत-११)

४. मनुष्य को ठीकरे जैसी खनकती मिटटी से पैदा किया (सूरा-५५, अल जिह्र अतायत-२६)

५. निस्संदेह हमने मनुष्य को खनखनाती हुई मिटटी से पैदा किया (सूर-१५, अल हिज्र आयत-२६)

६. याद करो जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिटटी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूं (सूरा-१५, अल हिज्र आयत-२८)

७. उस इबलीस ने कहाः मैं ऐसा नहीं हूं कि ऐसे मनुष्य को सजदा करूं जिसको तूने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिटटी से पैदाकिया (सूर-१५ अल हिज्र आयत-३३)

इन आयतों से पता चलता है कि अल्लाह ने मनुष्य को मिटटी से पैदा किया, जिसकी विशेषता यह थी कि वह लेसदार थी, जब सूखी तो खनखनाती हुई हो गई। फिर अल्लाह ने स्वंय ही उसे ठीक-ठाक किया।

याद करो जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहाः निश्चय ही मैं मिटटी से एक मनुष्य बनाने वाला हूं। फिर जब मैं उसको ठीक-ठाक कर दूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सजदे में गिर पड़ना। (सूरा-३८, साद आयते-७१,७२

अल्लाह ने इस मिटटी के पुतले को ऐसा ठीक-ठाक किया कि वह उसकी सारी सृष्टि में उत्तम बन गया।

निस्संदेह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया। (सूरा-६५, अत तीन आयत-४)

और फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया (कुरआन, सूरा-४, निसा, आयत-१) और इस जोड़े से बहुत सी स्त्री पुरूष पैदा किए। कुरआन मजीद में है।

अल्लाह ने जो वस्तु भी बनाई बहुत ही सुन्दर बनाई और मनुष्य की रचना का आरम्भ गारे से किया। फिर उसका वंश निचुड़े हुए तुच्छ पानी से चलाया (सूरा-३२, अस-सजदा, आयतें-७,८)

अब ऐसा तुच्छ मनुष्य देखिए

फिर किस प्रकार घमंड करता दिखाई देता है।

१. उसने मनुष्य को एक बूंद (वीर्य) से पैदा किया। फिर क्या देखते हैं कि वह स्पष्ट झगड़ालू बन गया। (कुरआन सूरा-१६, नहल आयत-४)

२. क्या मनुष्य ने देखा नहीं कि हमने उसे एक बूंद (वीर्य) से पैदा किया। फिर क्या देखते हैं कि वह स्पष्ट झगड़ालू बन गया। (कुरआन सूरे यासीन-७७) जब उसको अपने पैदा करने वाले की ओर बुलाया जाता है तो भिन्न भिन्न प्रकार से उसका इनकार करता है। उसके भेजे हुए दूतों को झुठलाता है और उसके भेजे हुए मार्गदर्शन को ठुकराता है। जबकि कुरआन कहता है।

''हमने आदम की संतान को बड़ी श्रेष्ठता प्रदान की और उसे जल और थल में सवारी दी (अर्थात ज्ञान प्रदान किया कि सवारी बनाए) तथा उन्हें पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान की तथा अपने बहुत से प्राणियों पर उन्हें श्रेष्टता प्रदान की''। (सूरा-१७ बनी इसराईल, आयत-७०)

यह श्रेष्ठता इनसानों को इसलिए प्रदान की गई थी कि वे अल्लाह के भेजे हुए धर्म का पालन करें। परन्तु इनसानों ने उससे मुंह मोड़ लिया। कुरआन में है।

''उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसे उसके प्रभु की आयतों द्वारा शिक्षा दी गई, परन्तु उसने उससे मुंह मोड़ लिया? (सूर-कहफ आयत-५७)

ऐ मनुष्य! तुझे अपने दयालु प्रभु से किस चीज़ ने बहकाया है? सूरा-८२, अल इन्फितार, आयत-६

कुरआन की सबसे छोटी सूरा अल अस्र है। इसमें केवल तीन आयतें हैं। इस सूरा में इनसान की वास्तक्ति को बड़े ही सुन्दर ढंग से बयान किया गया है।

''समय की सौगन्ध, वास्तव में समस्त मनुष्य सर्वथा घाटे में हैं। केवल उनके अतिरिक्त जो ईमान ला, पुण्य कर्म किए, आपस में सत्य की ताकीद करते रहे तथा एक दूसरे को धैर्य रखने का उपदेश देते रहे। (सूरा-१०३, अल अस्र आयतें १-३)

इन आयतों में अल्लाह ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि इनसान की सफलता के लिए अब केवल एक ही मार्ग रह गया है। जिसकी चार विशेषताएं हैं १. विश्वास २. अच्छे कर्म ३. सत्य की ताकीद ४. धैर्य रखने का उपदेश।

इसी लिए इमाम शाफई का विचार है कि अगर अल्लाह केवल इस सूरा ही को उतार देता तो इनसान के कल्याण के लिए यही सरूरा काफी होती।

कुरआन की शिक्षाओं की एक विशेषता यही भी है कि एक ओर तो वे इनसानों की कमज़ोरियों को बयान करती हैं तो दूसरी ओर बता देती हैं कि इन कमज़ोरियों से वे लोग मुक्त हैं जो ईमान लाएं और अच्छे कर्म करें।

लेकिन फिर यही इनसान इतना सब कुछ करने के बावजूद अत्याचारी और सरकश बन जाता है। अल्लाह के बताए हुए नियम पर अमल नहीं करता, बल्कि अपने मन में आई हुई बातों को मानता है, और संसार में फसाद फैलाता है।

सत्य और असत्य, अच्छाई और बुराई इतनी स्पष्ट कर देने के

बाद भी मनुष्य अल्लाह के बताए हुए सत्यमार्ग को न अपनाकर स्वयं अपने ऊपर और पूरे संसार पर अत्यचार करता है, धरती पर फसाद फैलाता है और इतना बड़ा बन जाता है कि यह तक भूल जाता है कि उसकी इस दुनिया में क्या हैसियत है। कुरआन उसे अपनी हैसियत याद दिलाते हुए कहता है।

हमने मनुष्य को सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिटटी से पैदा किया (सूरा-१५, अल हिज्र २६)

उसने मनुष्य को एक बूंद (वीर्य) से पैदा किया। फिर क्या देखते हैं कि वह खुला झगड़ालू बन गया। (सूरा-१६, नहल आयत-४)

क्या मनुष्य इस बात को याद नहीं करता कि हमने उसे पैदा किया, जबकि वह इससे पहले कुछ भी नहीं था? सूरा-१९, मरयम आयत-६७

निश्चय ही हमने मनुष्य को मिटटी के सत से बनाया। फिर उसको एक सुरक्षित स्थान पर वीर्य के रूप में रखा। फिर उस वीर्य को लोथड़े का रूप दिया। फिर उस लोथड़े को मांस की बोटी का रूप दिया। फिर बोटी की हडिडयां बनाईं। फिर उन हडडियों पर मांस चढ़ाया। फिर उसे एक दूसरा ही सृजन रूप देकर खड़ा किया। तो बहतु बरकतवाला है अल्लाह सबसे उत्तम सृष्टिकर्ता (सूरा-२३, अल मामिनून १२-१४)

जिसने हर वस्तु को अच्छा बनाया। और मनुष्य को गारे से पैदा किया। फिर उसका वंश एक निचुड़े हुए तुच्छ पानी से चलाया। फिर उसको दुरूस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रूह (आत्मा) फूंकी और तुम्हें और आंखें और दिल दिए। तुम लोग कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो। (सूरा-३२, अस-सजदा, ७-९)

क्या मनुष्य ने देखा नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया। फिर क्या देखते हैं कि वह खुला झगड़ालू बन गया। और उसने हमपर फब्ती कसी और अपनी पैदाइश को भूल गया। कहने लगा, कौन इन हडिडयों में जान डालेगा, जब ये गल गई होंगी। कहो, इनमें वही जान डालेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया। और वह पैदा करने का हर काम जानता है। (सूर-३६, या सीन आयतें-७७,७९)

इनसान की पैदाइश और उसकी हिदायत के उसूल बयान करने के लिए अल्लाह ने इकतीस आयत की एक पूरी सूरा उतारी है, जिसको सूरा इनसान कहते हैं, कुछ लोग इसको सूरा दहर भी कहते है। नीचे इस सूरा की कुछ आयतों का अनुवाद दिया जा रहा है।

''क्या मनुष्य पर कोई ऐसा समय भी आया है जब वह कुछ भी चर्चा के योग्य नहीं था, हमने मनुष्य को मिले-जुले वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते पलटते रहे फिर हमने उसको सुननेवाला और देखने वाला बनाया। और हमने उसे मार्ग दिखाया, अब या तो कृतज्ञ हो या कृतघ्न (सूरा-७६, आयतें-१,३)

''निस्संदेह ये लोग जल्द मिलने-वाली वस्तु को प्रिय रखते हैं। और उस मुश्किल दिन आख़िरत को छोड़ बैठे हैं। हमने उनको पैदा किया और उनके जोड़-जोड़ को मज़बूत बनाया। और हम जब चाहें तो उनके बदले उन्हीं जैसे लोग ला बिठाएं। यह कुरआन एक शिक्षा है। फिर जो कोई चाहे अपने रब पालने

वाले की तरफ पहुंचने का मार्ग अपनाए (सूरा-७६, दहर आयतें-२७-२६)

अल्लाह ने मनुष्य को किस प्रकार पैदा किया, उसके जीवित रहने के लिए कैसी कैसी सामग्री बनाई, आकाश से पानी बरसाया, पृथ्वी से गल्ले उगाए ताकि मनुष्य अपने इस सांसारिक जीवन को कुशलतापूर्वक बिताए। इसके बदले में अल्लाह ने उससे केवल एक अपेक्षा की, वह यह कि केवल उसी की उपासना की जाए। किसी को उसके साथ शरीक न किया जाए। उसकी बनाई हुई पृथ्वी पर उसका कानून चलाया जाए और संसार को फसाद से दूर रखा जाए। मगर अफसोस कि मनुष्य यह सब कुछ भूल बैठा है और उसने अपने आपको ज़मीन पर दमनकारी बना रखा है। देखिए इस विषय में कुरआन क्या कहता है।

''सूरज और चांद को तुम्हारी सेवा में लगाया कि निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं और रात और दिन को तुम्हारी सेवा में लगाया। और तुम्हें वह सब कुछ दिया जो तुमने उससे मांगा। यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन नहीं सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अन्यायी और कृतघ्न है। (सूरा-१४, इबराहीम, आयतें ३३,३४)

''जब समुद्र में तुम पर कोई तकलीफ पहुंचती है, तो उस एक अल्लाह के अतिरिक्त जिन्हें तुम पुकारते हो गुम हो जाते हैं। परन्तु जब वह तुम्हें बचाकर थल पर पहुंचा देता है, तो तुम उससे मुंह मोड़ लेते हो। मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है। (सूरा-१७, बनी इसराईल, आयत-६७)

''जब हम मनुष्य को नेमत देते हैं तो वह कतराता है और अपना पहलू बचाता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो निराश हो जाता है। (सूरा-१७, बनी इसराईल, ८३)

हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर एक मिसाल तरह-तरह से बयान की, परन्तु मनुष्य सबसे बढ़कर झगड़ालू है। सूरा-१७, बनी इसराईल-८३

हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर एक मिसाल तरह-तरह से बयान की, परन्तु मनुष्य सबसे बढ़कर झगड़ालू है। (सूरा-१८, अल-कहफ, आयत-५४)

मनुष्य आश्चर्य से कहता है, क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर जीवित करके निकाला जाऊंगा। क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हम उसे इससे पहले भी पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था? और तेरे रब की क़सम! हम उन्हें और शैतानों को जमा करेंगे। फिर इन सबको जहन्नम के चारों ओर हाज़िर करेंगे, इस हाल में कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे। (सूरा-१६, मरयम, आयतें-६६-६८)

ऐ इनसान! किस चीज़ ने तुझे अपने उदार रब के बारे में धोखे में डाल रखा है जिसने तुझे पैदा किया। फिर ठीक-ठीक बनाया, फिर ठीक-ठाक बनाया, फिर जिस प्रकार के रूप में चाहा तेरी रचना की। मगर अफसोस तुम लोग बदले के दिन को झुठलाते हो। हालांकि तुमपर निगरानी करने वाले नियुक्त हैं, प्रतिष्ठावान हैं। (तुम्हारी बातों और कर्मों को) लिखने वाले। जो तुम करते हो वे उसे जानते हैं। बेशक नेक लोग आनन्द जन्नत में होंगे।

और उससे वे बच रहने वाले नहीं और तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है, फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है, जिस दिन कोई जीव किसी जीव के लिए कुछ न कर सकेगा। और अधिकार उस दिन अल्लाह ही का होगा। (सूरा-८२ अल इनफितार, आयतें-६,१६)

अर्थात उस दिन कोई मनुष्य फरिश्ते, नबी वली किसी का कोई भला नहीं कर सकेंगे। हर व्यक्ति अपने हिसाब-किताब में लगा होगा। कोई किसी का बोझ उठाने के लिए तैयार नहीं होगा। इसी को सूरा अन नज्म में यूं कहा गया। ''वह यह कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि इनसान को वही कुछ मिलता है, जिसकी वह चेष्टा करता है। (सूरा-५३, अन नज्म, आयतें-३८,३६) फिर कुरआन उस मनुष्य का वर्णन करता है जो सफल हुआ। ''ढलते समय की क़सम! मनुष्य तो वास्तव में घाटे में है। सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए (इस्लाम पर) और अच्छे कर्म किए (इस्लाम के बताए हुए) और एक-दूसरे को सत्य की ताकीद की और एक दूसरे को सब्र की ताकीद करते रहे। (सूरा-१०३, अल अस्र आयतें१-३) अर्थात सत्य बात कहने में बहुत सारी कठिनाइयां आएंगी। मगर सफल मनुष्य वह है जो उनकी झेल ले और सत्य पर अटल रहे और लोगों को उसकी तरफ बुलाए। इस मार्ग पर चलने में जो मुश्किल आए उस पर सब्र करे, तो यही सफल मनुष्य है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

कौन लोग ज़कात के हक़दार हैं?

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ रह०

ज़कात अल्लाह तआला का हक़ है। इसमें से जो इसका हक़दार न हो उसे देना जायज़ नहीं और न ही निजी लाभ उठाने के लिये इसका इस्तेमाल जाइज़ है, इसी प्रकार किसी घाटे को पूरा करने के लिये भी इसका इस्तेमाल जाइज़ नहीं। बल्कि एक मुसलमान पर फर्ज़ है कि वह अपनी ज़कात की रकम ज़कात के हक़दारों पर इसलिये ख़र्च करे कि वह उसके हक़दार हैं। इस ज़कात को अदा करने के पीछे किसी लाभ की आशा नहीं करनी चाहिये ताकि यह फर्ज़ बेहतर तौर पर अंजाम पाये और ज़कात देने वाला अल्लाह तआला के निकट बेहतरीन बदले का हक़दार ठहरे।

अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में ज़कात के हक़दारों का बयान फरमा दिया है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

''सदक़ा-ज़कात, केवल फ़कीरों के लिये हैं और मिसकीनों के लिये, और उनकी वसूली करने वालों के लिये, और उनके लिये जिनके दिल को नर्म करना उददेश्य हो, और गर्दन छुड़ाने, क़र्ज़दारों की मदद करने, अल्लाह की राह में ख़र्च करने और मुसाफिरों के लिये है। यह एक फरीज़ा है अल्लाह की तरफ़ से। और अल्लाह ज़्यादा जानने वाला, हिक्मत वाला है।'' (सूरह तौबा-६०)

इस आयत को अल्लाह तआला के ''अलीम'' (जानने वाला) और हकीम (हिक्मत वाला) इन दो नामों के साथ खत्म किये जाने से इस बात की तरफ इशारा करना है कि अल्लाह तआला अपने बंदों के हालात की पूरी जानकारी रखता है। वह भली भांति जानता है कि उनमें कौन सदक़ा का हक़दार है और कौन नहीं है और वह अपने बनाये हुए कानून और तै किये हुये तकदीर में बहुत ज्यादा हिक्मत से काम लेता है। वह हर वस्तु को उसके उचित स्थान पर रखता है, अगर्चे कुछ लोग उस हिक्मत को न समझ सकें। उसका हर काम हिक्मत से भरा होता है ताकि उसके बन्दे उसकी शरीअत से मुतमइन रहें और उसके हुक्म के सामने अपनी गर्दनें झुका दें।

अल्लाह तआला हम तमाम मुसलमानों को दीन की समझ, मामलात को सुलझाने और अल्लाह की रज़ा को हासिल करने की तौफीक़ अता फरमाये और अपने गजब और नाराज़गी से बचाये रखे, वह अधिक सुनने वाला और बहुत करीम है।

सोने और चांदी के ज़ेवरों में ज़कात

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि-अम्मा बाद!

सोने और चांदी के आभूषणों में ज़कात और उसके दलाइल के बारे में लोगों ने बहुत अधिक प्रश्न किया है। लोगों के लाभ उठाने के लिये मैंने इस प्रश्न का उत्तर भी दिया है। अल्लाह ही नेक कामों की तौफीक़ देने वाला और सीधी राह की रहनुमाई करने वाला है।

सोने-चांदी के ज़ेवरात (आभूषण) में ज़कात की अदायगी का मस्अला उन मसाइल में से है जिनमें सहाबा और उनके बाद के उलमा के दर्मियान इख़्तिलाफ़ रहा है। कुरआन व सुन्नत का हुक्म है कि जिस मसअले में लोगों का आपस

में इख़्तिलाफ हो जाये, उस को अल्लाह की किताब और नबी स० की सुन्नत की तरफ़ लौटा जाये। अल्लाह तआला का फ़र्मान हैः

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअ़त करो और उसके रसूल की इताअत करो और तुम में से इक़्तिदार वालों की। फिर अगर किसी मस्अले में तुम्हारा इख्तिलाफ़ हो जाये तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ लौटा दो, अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। इसी में भलाई है और इसका अन्जाम भी बेहतर है।'' (सूरः निसा-५६)

जब हम कुरआन हदीस की रोशनी में इस मस्अले पर गौर करते हैं तो मालूम होता है कि यह दोनों (कुरआन-हदीस) स्पष्ट रूप से महिलाओं के सोने, चांदी के ज़ेवरों में ज़कात के वाजिब होने का हुकम देते हैं, चाहे वह ज़ेवर निजी प्रयोग के लिये हो, या लोगों के मुफ्त प्रयोग के लिये। चाहे वह कंगन या अंगूठी, या इनके अलावा सोने और चांदी के बने हुए दूसरे ज़ेवरात हों। इसी प्रकार सोने और चांदी के बने हुए दूसरे ज़ेवरात हों। इसी प्रकार सोने और चांदी की मिलावट से बने हुए औज़ार का भी यही हुकम है। यानी अगर उसमें प्रयोग किया गया सोना या चांदी निसाब को पहुंच जाये या उसके मालिक के पास मौजूद सोना या चांदी, या तिजारत के लिये सामान मजमूई तौर पर निसाब को पहुंच जाये (तो इन सब में भी ज़कात फ़र्ज़ है) इस मसअला में उलमा के अक़्वाल में ज्यादा सहीह क़ौल यही है (जो ऊपर बयान हुआ) इसकी दलील कुरआन मजीद की यह आयतें हैंः

''और जो लोग सोना और चांदी को जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हैं तो आप उन्हें दुख दाई दन्ड की सूचना दे दीजिये। जिस दिन उसे जहन्नम की आग में गर्म किया जायेगा, फिर उससे उनकी पेशानी, उनके पहलू और पीठ को दाग़ा जायेगा और उनसे कहा जायेगा यही है वह माल जो तुमने अपने लिये जमा किया था, तो चखो उसका मज़ा जो तुम जमा करते थे।'' (सूरः तौबा-३४,३५)

अहादीस से भी यही साबित है। चुनांचे मुस्लिम शरीफ़ की सहीह रिवायत में है कि रसूल स० ने फरमायाः

''जो शख्स अपने सोना, चांदी की ज़कात नहीं देता है उसके लिये क़ियामत के दिन जहन्नम के आग की तख्तियां बनाई जायेंगी, फिर उनसे उसका पहलू पेशानी और पीठ दाग़ी जायेंगी, जब भी वह तख़्तियां ठन्डी होंगी उन्हें पुनः गर्म किया जायेगा, एक ऐसे दिन में जिस की मात्रा पचास हज़ार वर्ष होगी, फिर उसे उसका रास्ता या तो जन्नत या जहन्नम की तरफ़ कर दिया जायेगा''।

कुरआन व अहादीस की यह दोनों दलीलें सोने और चांदी की चीज़ों पर ज़कात के वाजिब होने पर दलालत करती हैं और इनमें से सोने चांदी के ज़ेवर (चाहे जिस काम के लिये हों) भी दाख़िल हैं। अगर कोई शख़्स इनमें से कुछ चीज़ों को ज़कात से अलग करता है तो उसके लिये आवश्यक हैं कि इसकी कोई दलील पेश करे। और यह उस सूरत में जबकि इस मस्अला के मुतअल्लिक़ इस उमूम के अलावा कोई दलील न होती, लेकिन यहां तो बहुत सारी सहीह हदीसें मौजूद हैं जिनसे साबित होता है कि सोने-चांदी के ज़ेवरात पर भी ज़कात फ़र्ज़ है। चुनांचे अबू दावूद और नसई ने सहीह सनद के साथ अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आ़स रज़ि० से रिवायत है किः

''नबी करीम स० के पास एक महिला आई, उसकी लड़की के हाथ में सोने के दो कंगन थे। आप स० ने उससे पूछाः क्या तुम इनकी

ज़कात देती हो? उसने कहा कि नहीं। आप स० ने फरमायाः क्या तुम्हें पसंद है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तुम्हें इन दोनों कंगनों के बदले आग के दो कंगन पहनाये? यह सुन कर उसने उन दोनों कंगनों को ज़मीन पर डाल दिया और कहाः ''यह दोनों अल्लाह और रसूल के लिये हैं।'' (अबूदावूद, नसई-हाफिज़ इब्ने क़त्तान ने इसकी सनद को सहीह कहा है)

एक दूसरी हदीस में अबू दावूद ने जय्यिद सनद के साथ उम्मे सलमा रजि० से रिवायत की है कि वह सोने के पाज़ेब पहना करती थीं। उन्होंने नबी करीम स० से पूछा कि क्या यह भी ''कन्ज़'' (ख़ज़ाना) में दाख़िल है? आप स० ने फरमायाः

''हर वह सोना जो निसाब को पहुंच जाये और उसकी ज़कात अदा कर दी जाये तो वह कन्ज़ (ख़ज़ाना) नहीं कहलायेगा।''

इस हदीस में दो बड़े फ़ाइदे हैंः

पहला फ़ाइदाः निसाब की शर्त यानी इससे यह साबित होता है कि जो सोना चांदी निसाब को नहीं पहुंचेगा उसमें ज़कात वाजिब नहीं हैं, और न ही उसका शुमार उस ख़ज़ाना में होगा जिसके बारे में सख़्त धमकी दी गयी है।

दूसरा फाइदाः दूसरा फाइदा यह है कि हर वह माल जिस में ज़कात वाजिब हो जाये और उसकी ज़कात न दी जाये उसका शुमार उस ख़ज़ाना पर होगा जिसके बारे में अज़ाब की सज़ा सुनायी गयी है।

तीसरा फ़ाइदाः इसमें एक तीसरा फाइदा यह भी है जो हदीस के ज़िक्र करने का मक़सद है, यानी यह हदीस सोने-चांदी के ज़ेवरात में ज़कात के वाजिब होने पर दलालत करती है जिसके बारे में उम्मे सलमा रज़ि० ने आप स० से प्रश्न किया था।

सुनन अबू दावूद की एक दूसरी रिवायत से जो आइशा रज़ि० से मर्वी है उससे भी यही साबित होता है किः

नबी करीम स० ने मुझे चांदी के कुछ छल्ले पहने हुये देखा तो आप स० ने पूछाः ऐ आइशा यह क्या है? मैंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने इन्हें इस वास्ते बनवाया है ताकि आप के लिये खूबसूरत बन सकूं। आप स० ने पूछा कि क्या तुम इसकी ज़कात निकालती हो? मैंने कहा कि नहीं। आप स० ने फ़रमायाः वह जहन्नम की आग में से तुम्हारा हिस्सा है।''

ऊपर बयान की गयी हदीसों से साबित होता है कि सोने-चांदी के ज़ेवरों में ज़कात वाजिब है, ज़ेवरों में ज़कात वाजिब है, वह ज़ेवर चाहे निजी प्रयोग के लिये हों, या लोगों के मुफ्त इस्तेमाल के लिये, क्योंकि नबी करीम स० ने आइशा रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की हदीस में (जो ऊपर गुजर चुकी हैं) उस औरत पर नाराज़गी का इज़्हार फरमाया कि उसने अपने निजी इस्तेमाल किये जाने वाले ज़ेवरात की ज़कात नहीं दी थी, और आप स० ने किसी प्रकार के ज़ेवर को ज़कात से अलग नहीं किया, इसलिये नस्से सहीह (सहीह दलील) और उससे निकलने वाले आम हुक्म पर अमल करना वाजिब हुआ, क्योंकि नुसूस की तखसीस इस सूरत में जाइज़ है जबकि उसकी तखसीस की कोई सहीह दलील मौजूद हो। रही वह हदीस जिसमें आप स० ने फरमायाः

''ज़ेवरात में ज़कात नहीं है''

तो यह हदीस जईफ है इसलिये इस हदीस से दलील और हुज्जत पकड़ना जाइज़ नहीं, है, और न ही यह हदीस इस काबिल है कि इसके जरीआ ऊपर बयान की गयी हदीस को खास किया जाये। हाफिज़ बैहक़ी ने तो कहा है कि हदीस बातिल है और इसकी कोई अस्ल नहीं है। हाफिज़ जैलई ने नसबुर्रायह में और हाफिज़ इब्ने हजर ने तलखीस में उनका यह कौल नकल किया है।

❑❑❑

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम

15 वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स

पिछले वर्षों की तरह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा प्रचारकों, अध्यापकों और अइम्मा का आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स 4 मई से 11 मई 2025 तक आयोजित होगा।

उम्मीद है कि यह रेफ्रेशर कोर्स भी पिछले वर्षों की तरह लाभप्रद होगा। जमाअत के सुप्रसिद्ध इस्लामी स्कालर्स, शोधकर्ता, कानूनी माहिरीन अपने इलमी, और दावती अनुभव से लाभान्वित करेंगे। राज्यों के अमीरों और सचिवगण से अपील है कि वह अपने प्रतिनिधियों के नाम जल्द से जल्द भेज दें। हर राज्य से दो प्रतिनिधियों के नाम भेजें।

रेफ्रेशर कोर्स का उदघाटन सत्र 4 मई 2025 इतवार को सुबह 8 बजे आयोजित होगा जिसमें तमाम भाग लेने वालों की शिर्कत ज़रूरी है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

रमज़ानुल मुबारक के अवसर पर

सदक़ात व खैरात का हिस्सा मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द को देना न भूलें

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हिन्दुस्तान में अहले हदीसों का नुमाइन्दा पलेटफार्म है जो अपने उददेशों व लक्ष्यों की रोशनी में योजनाओं को पूरा करने के लिये प्रयासरत है। उसकी दावती, तबलीगी, तालीमी, तर्बियती, तहरीरी व सहाफती, कल्याणकारी एवं समाजी सेवाओं का एक लम्बा सिलसिला है। सेमीनार कांफ्रेन्स और प्रतियोगिता के आयोजन, विभिन्न भाषाओं में पत्रिकाओं का प्रकाशन, तफसीर, हदीस और अहम दीनी किताबों के प्रसारण का काम पाबन्दी से हो रहा है। यह सब काम अल्लाह के फज्ल व करम के बाद अहले खैर हज़रात शुभचिंतकों उपकारकों के सहयोग से हो रहा है। इस पर हम अल्लाह के शुक्रगुज़ार हैं और अपने उपकारकों और मुख्लिसीन के भी जिन्होंने किसी न किसी पहलू से मर्कज़ी जमीअत के विकास में भाग लिया है और उसके योजनाओं को पूरा करने में आज भी सहयोग जारी रखे हुये हैं।

तमाम शुभचिंतकों व मुख्लिसीन से अपील है कि रमज़ान के मौके पर मर्कज़ी जमीअत के तमाम विभागों को सक्रिय रखने और उसके निमार्ण कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये जमीअत के जिम्मेदारों और कार्यकर्ताओं के साथ भरपूर सहयोग करें। वह आपकी सेवा में हाज़िर होंगे। अगर इनमें से कोई आपके पास न पहुंच सके तो कृपया अपना सहयोग मर्कज़ी जमीअत के दफतर में भेज दें अल्लाह आपकी नेकियों को कुबूल करे।

चेक या ड्राफ केवल : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

के नाम से बनवायें :A/c No.629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6

अपीलः- मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

FEBRUARY 2025
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

Paytm UPI
9899152690@ptaxis

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पताः-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

28

Total Pages 28